Vageeshwari *Dec. 2020, Vol. 34*
ISSN 0975-7872

शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में ब्रेल लिपि का महत्व

डॉ. शालिनी ठाकुर
असिस्टेंट प्रोफेसर
संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार

'स्वरलिपि पद्धति' सांगीतिक बंदिशों को समझनें का एक ऐसा माध्यम है, जिनसे हम किसी भी बंदिश को बिना सुने, मात्र पढ़कर भली भाँति समझ सकते हैं। इस पद्धति के निर्माण का श्रेय पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी तथा पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी को जाता है। आज के समय में हर्ष का विषय यह भी है कि इस पद्धति का प्रयोग दृष्टिबाधित वर्ग भी भली भाँति कर पा रहे हैं। जिसके लिए हमें उन सभी विद्वानों का भी आभारी रहना चाहिए जिनके माध्यम से इस पद्धति का लाभ हमारे संगीत जगत के दृष्टिबाधित वर्ग तक भी पहुँच सके। ब्रेल लिपि का आविष्कार करने में लुई ब्रेल का बहुत बड़ा योगदान है। वे स्वयं एक दृष्टि बाधित व्यक्ति थे।

ब्रेल स्वर लिपि के निर्माण से दृष्टिबाधित वर्ग का शैक्षिक और व्यावसायिक उत्थान कुछ हद तक संभव हो पाया है। किन्तु अभी भी इसमें बहुत अधिक प्रयास और कुछ संशोधन की आवश्यकता है। संगीत के कुछ दृष्टि बाधित कलाकार इन स्वरलिपियों को लेकर एक मत नहीं हो पाये हैं। ब्रेल स्वरलिपि को एकरूपता प्रदान करने में बहुत से संगीतज्ञ अथक परिश्रम कर रहे हैं तथा इसमें उन्हें काफी हद तक सफलता भी मिली है।

हिन्दुस्तानी संगीत के साथ–साथ कर्नाटक संगीत की भी ब्रेल में स्वरलिपि पद्धति तैयार की जा रही हैं। वर्तमान समय में ब्रेल की ऐसी बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनमें ब्रेल स्वरलिपि पद्धति का भरपूर प्रयोग किया गया है। ब्रेल पुस्तकों को छापने के लिए ब्रेल प्रैस तो उपलब्ध है ही किन्तु कुछ समय से दृष्टिगत पुस्तकों को एम्बॉजर के द्वारा ब्रेल में परिवर्तित किया जा रहा है।

संकेत शब्द

शास्त्रीय संगीत, ब्रेल स्वर लिपि, ऑर्बिट रीडर, ब्रेलर, स्टाइलस

हिन्दुस्तानी संगीत सदैव से ही अत्यंत समृद्ध रहा है। सबसे विशेष बात तो इसमें यह है कि समय की निरंतरता के बावजूद भी इसकी प्राचीन छवि कभी भी धूमिल या फिर लुप्त नहीं हुई है। इसका श्रेय मुख्य रूप से उन महान सगीतज्ञों को जाता है जिन्होंने इनके संरक्षण, संकलन, प्रचार–प्रसार का

कार्य किया जिसमें मुख्य रूप से संगीत की स्वर लिपि पद्धति के निर्माण का कार्य अद्वितीय रहा है।इसके ही माध्यम से हम प्राचीन समय के संगीत का अनुभव आज के समय में भी कर पा रहे हैं। स्वरलिपि पद्धति सांगीतिक बंदिशों को समझने का ऐसा माध्यम है जिससे हम उन्हें मात्र पढ़कर सांगीतिक रचनाओं को उसी रूप में भली भाँति समझ सकते हैं।

संगीत की दो महान विभूतियाँ पं. विष्णु नारायण भातखण्डे और पं.विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने संगीत की स्वरलिपियों की रचना करके भारत में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में विशेष स्थान प्राप्त किया और संगीत का प्रचार–प्रसार किया।

साथ ही हमें उन सभी विद्वानों का भी सदैव आभारी रहना चाहिए जिनके माध्यम से इस पद्धति का लाभ हमारे संगीत जगत के दृष्टिबाधित वर्ग तक भी पहुँच सका। ब्रेल लिपि दृष्टिबाधित वर्ग के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस लिपि के माध्यम से वे लोग हर क्षेत्र तथा हर विषय में सफल हुए हैं। आज समस्त विश्व में इसका इतना अधिक प्रचार–प्रसार हो चुका है जिस कारण सामान्य लोगों की तरह दृष्टिबाधित वर्ग के लिए भी पढ़ना–लिखना संभव हो गया है।

ब्रेल में संगीत की स्वरलिपियों की रचना करने वाले उन सभी विद्वानों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा सभी दृष्टिबाधित वर्गों के मन में इनका सर्वोत्तम स्थान सदैव ही रहेगा। किन्तु फिर भी इस लिपि में कुछ और संशोधन की आवश्यकता है। जैसे कि मींड, खटका, मुर्की, कण, गमक आदि चिन्हों को दर्शाने के लिए कुछ ऐसे प्रावधान किए जायें जिससे वे लोग सरलता से पढ़ और लिख सकें। संशोधन करने के बाद भी थोड़ी बहुत चुनौतियाँ तो रहेंगी ही और चुनौतियाँ ही हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं और हमारा मार्गदर्शन भी करती हैं। ब्रेल स्वरलिपि को लेकर जहाँ लोगों में मतभेद है अगर यह मतभेद समाप्त हो जाये तो पूर्ण रूप से सभी दृष्टि बाधित वर्ग इस लिपि का लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

लुई ब्रेल ने ब्रेल का आविष्कार सन् 1821 में किया था। किन्तु सन् 1829 में इसे पूर्ण रूप से स्वीकृति मिली। इसी तरह यदि ब्रेल संगीत स्वर लिपि को पूर्ण रूप से स्वीकृति मिल जाए तो ब्रेल पढ़ने वाले संगीत साधक सहजता से इसका लाभ प्राप्त कर सकेंगे। तथा इन स्वरलिपियों के आधार पर ही नयी–नयी रचनाएँ कर सकेंगे। लुई ने जब ब्रेल लिपि का आविष्कार किया उस समय वह केवल 15 वर्ष के थे।

ब्रेल लिपि का आविष्कार करने में लुई ब्रेल का बहुत बड़ा योगदान है। वे स्वयं एक दृष्टिबाधित व्यक्ति थे। लुई ब्रेल का जन्म 4 जनवरी 1809 में फ्रांस के एक छोटे से गाँव कुप्रे में हुआ था। उनके पिता साइमन चमड़ा सिलने का कारोबार करते थे। बचपन में लुई उनके चमड़ा सिलने वाले सुए को बड़ी ध्यान से देखा करते थे। एक दिन वे अपने पिता की अनुपस्थिति में उसी सुए से चमड़ा सिलने का प्रयास कर रहे थे। तभी वह सुआ उनकी आँख में चुभ गया। इस दुर्घटना के दौरान उनकी आयु केवल तीन वर्ष थी।[1] धीरे–धीरे इस दुर्घटना का असर उनकी दूसरी आँख पर भी होने लगा। लगभग पाँच वर्ष की आयु

तक लुई की दोनों आँखों की रोशनी जा चुकी थी और उनके लिए शिक्षा प्राप्त करना मानो असंभव सा हो गया था। किन्तु फिर भी लुई ने अपनी इस कठिनाई से हार नहीं मानी। उम्र बढ़ने के साथ–साथ उनकी सृजनात्मक शक्ति भी बढ़ने लगी और तभी से उन्होंने इस क्षेत्र में कुछ नये प्रयास करने प्रारंभ कर दिए। ब्रेल लिपि के लिए सबसे पहले उन्होंने 12 बिन्दुओं का आविष्कार किया। किन्तु कुछ समय पश्चात् उनको ऐसा लगने लगा कि इस लिपि में संशोधन करने की आवश्यकता है। और तब उन्होंने 12 बिन्दुओं से 6 बिन्दुओं में इस लिपि को परिवर्तित किया। आज सम्पूर्ण विश्व में 6 बिन्दुओं वाली लिपि प्रचलित है। ब्रेल लिपि में प्रत्येक आयताकार सेल में 6 बिन्दु यानि डॉट्स होते हैं, जो थोड़े–थोड़े उभरे हाते हैं। यह दो पंक्तियों में बने होते हैं। इस आकार में अलग–अलग 64 अक्षरों को बनाया जा सकता है।[2]

ब्रेल लिपि की वर्णमालाओं को विश्व की किसी भी भाषा में पढ़ा व लिखा जा सकता है। ब्रेल लिपि को उंगलियों के स्पर्श मात्र से पढ़ा जा सकता है। ब्रेल लिखने के लिए एक खास तरह की स्लेट और कलम जिसे 'स्टाइलस' कहा जाता है। ब्रेल में लिखने के लिए मोटे कागज़ की आवश्यकता होती है। मोटे कागज़ पर लिखने से ब्रेल के अक्षरों को भली–भाँति पढ़ा जा सकता है। ब्रेल सीखने के लिए सर्वप्रथम उसकी वर्णमालाओं को याद किया जाता है। हिन्दी और इंग्लिश की वर्णमालाओं में बहुत अधिक अंतर नहीं होता, किन्तु फिर भी दोनों का ज्ञान पूर्ण रूप से होना चाहिए। ब्रेल लिखने के लिए स्लेट के अतिरिक्त ब्रेलर का भी विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। इसके बाएँ और दाहिने ओर तीन–तीन अर्थात् छः बटन होते हैं। और इन दोनों के बीच में एक स्पेस का बटन होता है।

ब्रेल लिपि के आविष्कार को लगभग 150 वर्ष से भी अधिक हो चुके हैं तथा इतने वर्षों में इसका प्रचार–प्रसार और अधिक बढ़ गया है। एक वैज्ञानिक मान्यता के आधार पर यह कहा जाता है कि ब्रेल में लिखने से हमारी मांसपेशियों में खिंचाव पड़ता है तथा उससे ब्लड सर्कुलेशन बढ़ जाता है। आज के युग में इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के अत्यधिक उपयोग के कारण ब्रेल का प्रयोग कुछ कम हो गया है। इसके बावजूद भी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि इस समय इसकी आवश्यकता नहीं है। कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि आज के युग में इसकी अधिक आवश्यकता है। आज कुछ ऐसे इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों का निर्माण हो चुका है जिनके माध्यम से ब्रेल लिपि को पढ़ व लिख भी सकते हैं। इनमें ब्रेल नोट 'ऑरबिट रीडर' और 'ब्रेल रिफ्रेशेबल डिसप्ले' इत्यादि है। इनकी अपनी मैमोरी कार्ड होती है जिसमें दृष्टिगत पुस्तकों को स्कैन किया जाता है। इतना ही नहीं बल्कि इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारियों को भी इन उपकरणों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त एक और उपकरण है और वह है ब्रेल घड़ी। देखने में यह बाकी घड़ियों की तरह ही होती है। फर्क केवल इतना है कि इसके ऊपर का ढक्कन खोलकर हाँथ की उंगलियों के स्पर्श के द्वारा समय देख सकते हैं।

वर्तमान समय में इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों और कम्प्यूटर की मात्रा कितनी ही अधिक क्यों न बढ़ गयी हो फिर भी ब्रेल लिपि की तुलना इलैक्ट्रॉनिक उपकरण से नहीं की जा सकती। इतना अवश्य है कि कम्प्यूटर के माध्यम से किसी भी तरह की जानकारी या अध्ययन हेतु सामग्री शीघ्र उपलब्ध हो जाती है। और ब्रेल में सामग्री उपलब्ध करने में कुछ अधिक समय लगता है। किन्तु बहुत अधिक कम्प्यूटर के

सामने बैठना कई बार स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इसीलिए ऐसा प्रयास किया जा रहा है कि ब्रेल की उपयोगिता अधिक से अधिक बढ़े और इसकी आवश्यकताओं को समझा जाये।

तनिक विचार करके देखें, यदि ब्रेल लिपि का आविष्कार न हुआ होता तो दृष्टि बाधित वर्ग के लिए कितना कठिन होता। किन्तु कम्प्यूटर और इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों को भी नकारा नहीं जा सकता क्योंकि कम्प्यूटर के माध्यम से विश्व के किसी भी देश और उसकी संस्कृति के विषय की पूर्ण जानकारी सरलता से प्राप्त की जा सकती है। आज दृष्टि बाधित वर्ग भी कम्प्यूटर में जॉज (स्क्रीन रीडिंग सौटवेयर) इन्स्टॉल करके उसके माध्यम से हर तरह की जानकारियाँ प्राप्त कर सकता है। जॉज एक ऐसा सॉटवेयर है जिसके माध्यम से स्क्रीन पर आई हुई प्रत्येक जानकारी को सुनकर पता लगा सकते हैं।[3] इसके अतिरिक्त ई–मेल भेजना और कहीं से आये ई–मेल को पढ़ना, ऑनलाईन शॉपिंग, बिलों का भुगतान आदि जॉज के माध्यम से कर सकते हैं। यह सॉटवेयर इंग्लिश, हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध है। हिन्दी में इस सॉटवेयर को 'साफा' या 'लेखा' के नाम से जाना जाता है।

ब्रेल लिपि के विषय में एक और ऐसी वैज्ञानिक मान्यता है कि उंगलियों और मस्तिष्क के बीच एक गहरा संबंध होता है। जैसे कि ब्रेल में लिखी हुई कोई भी चीज़ या किसी भी विषय की जानकारी को यदि हम उंगलियों के स्पर्श के द्वारा पढ़ते हैं तो वह हमें बहुत अधिक समय तक याद रहती है। ब्रेल लिखने के लिए एक और साधन उपलब्ध है जिसे 'पॉकेट फ्रेम' के नाम से जाना जाता है और यह लोहे का बना होता है। इसका प्रयोग हम तब करते हैं जब हम कहीं अपने शहर से बाहर जा रहे हों और किसी भी विषय में यदि कोई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करनी हो और उस समय किसी कारणवश हमारे आसपास सहायता के लिए कोई उपस्थित न हो पाए। पॉकेट फ्रेम में एकसाथ चार या छः लाइनें बनी होती हैं। यह देखने में चौकोर होता है। पॉकेट फ्रेम को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में कोई कठिनाई नहीं होती। तथा इसे अपने पर्स या कैरी बैग में भी ले जा सकते हैं। वैसे आजकल इसकी इतनी अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि अब लोगों के पास विविध प्रकार के उपकरण उपलब्ध हैं। जिनके माध्यम से ब्रेल लिपि की उपयोगिता को भली–भाँति प्रदर्शित किया जाता है। बहुत सी ऐसी संस्थाएँ है जहाँ पर ब्रेल पुस्तकों के अतिरिक्त ब्रेल में कैलेण्डर भी प्रकाशित होते हैं। इनके अतिरिक्त ब्रेल शब्दकोष भी उपलब्ध हैं। ब्रेल में उपलब्ध सामग्री के संबंध में एक विशेष बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि इन सामग्रियों के ऊपर कोई भी भारी वस्तु नहीं रखी जानी चाहिए। भारी वस्तुओं को रख देने से इनके अक्षर बहुत जल्दी मिट जाते हैं।

ब्रेल में लगभग हर विषय की पुस्तकें अथवा अन्य सामग्री तो उपलब्ध है ही, अन्य विषयों के साथ–साथ संगीत विषय पर भी बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध हैं। विभिन्न संगीतज्ञों या विभिन्न कलाकारों की जीवनियाँ हों या कोई और जानकारी। संगीत के शास्त्र पक्ष के साथ–साथ क्रियात्मक पक्ष की जानकारी भी ब्रेल लिपि के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। परन्तु इसमें एक कठिनाई यह सामने आ रही है कि संगीत के कुछ दृष्टि बाधित कलाकार इन स्वरलिपियों को लेकर एक मत नहीं हो पाये हैं।

ब्रेल स्वरलिपि को एकरूपता प्रदान करने में बहुत से संगीतज्ञ अथक परिश्रम कर रहे हैं तथा इसमें उन्हें काफी हद तक सफलता भी मिली है। हिन्दुस्तानी संगीत के साथ–साथ कर्नाटक संगीत की भी ब्रेल में स्वरलिपि पद्धति तैयार की जा रही है। पुनर्वासीय सेवाओं की आधुनिक विचारधारा के जन्म से पूर्व भी संगीत को दृष्टि बाधित वर्ग के लिए एक महत्वपूर्ण कार्यकलाप समझा जाता था। अनेक दृष्टिहीन कवियों तथा संगीतज्ञों ने अपनी–अपनी संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी है। इनमें से कुछ लोगों ने केवल अपने देश में ही ख्याति प्राप्त नहीं की वरन इनका नाम दूर–दूर तक फैला है। जिनमें से देहरादून में स्थित प्रख्यात संगीतज्ञ श्री वासुदेव देशपाण्डे का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ब्रेल के आविर्भाव ने इन लोगों के लिए एक ऐसा साधन उपलब्ध करवाया जिसके द्वारा वे लोग अपनी कृतियों को सुरक्षित रख सकें।

ब्रेल स्वर लिपि के निर्माण से दृष्टिबाधित वर्ग का शैक्षिक और व्यावसायिक उत्थान कुछ हद तक संभव हो पाया है। किन्तु अभी भी इसमें बहुत अधिक प्रयास और कुछ संशोधन की आवश्यकता है। पाश्चात्य संगीत की स्वरलिपि तो एक शताब्दी से भी अधिक समय से अस्तित्व में है। सन् 1950 में यूनेस्को द्वारा आयोजित एक गोष्ठी में विभिन्न स्वर–लिपियों में एकरूपता लाने की ओर एक महत्वपूर्ण उन्नति दृष्टिगत हुई। दुर्भाग्यवश इस सम्मेलन के दौरान पूर्वी देशों में प्रचलित अनेक संगीत प्रणालियों में एकरूपता नहीं लायी जा सकी। सन् 1954 में भारतीय ब्रेल के आविर्भाव के उपरांत हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत की स्वरलिपि पद्धतियों में समानता लाने के लिए बहुत से प्रयत्न किये गये। सत्तर के दशक में दृष्टिबाधितार्थ राष्ट्रीय केन्द्र ने एक समान स्वरलिपि को जन्म दिया। किन्तु यह लिपि विस्तृत रूप में प्रयोग में न लायी जा सकी। अनेक संगीतज्ञों एवं विद्यालयों ने अपनी व्यक्तिगत स्वरलिपि का निर्माण किया था। परन्तु इन लिपियों के सीमित प्रयोग के कारण यह विशेष उपयोगी सिद्ध नहीं हो पायी। फलस्वरूप एक व्यक्ति द्वारा लिखी गयी पुस्तकें आदि दूसरा व्यक्ति नहीं पढ़ सकता था। सन् 1979 में दृष्टिबाधितार्थ राष्ट्रीय संस्थान में कुछ ख्याति प्राप्त संगीतज्ञों और ब्रेल विशेषज्ञों को एकत्र कर उन्हें एक समान प्रणाली निर्मित करने हेतु कार्य सौंपा गया। इस समिति के मार्गदर्शक श्री रमेशचन्द्र निझावन के निर्देशन में समान लिपि का जन्म हुआ। सितम्बर 1981 में अहमदाबाद में आयोजित एक कार्यशाला में इस प्रणाली को विचारार्थ प्रस्तुत किया गया। इस कार्यशाला में देश के विभिन्न भागों से आये अनेक संगीतज्ञों ने भाग लिया। यद्यपि उक्त कार्यशालाओं ने सैद्धांतिक रूप में इस लिपि को स्वीकृति प्रदान की गयी है। तथापि बहुत कुछ कार्य किया जाना बाकी था। हर्ष का विषय यह है कि इस कार्य के प्रथम चरण के रूप में हिन्दुस्तानी संगीत हेतु ब्रेल स्वरलिपि पद्धति को एक नयी दिशा प्रदान की गयी।[4] आशा है कि इस कार्य के दूसरे चरण में आगामी कुछ ही वर्षों में कर्नाटक संगीत के लिए एक नयी प्रणाली के निर्माण किये जाने की संभावना है। और इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। तथा ऐसा विश्वास भी है कि आने वाले कुछ ही समय में इस लिपि को परिष्कृत रूप प्रदान किया जा सके, एवं दृष्टिहीन व्यक्ति संगीत को ब्रेल बद्ध करने के क्षेत्र में स्वयं को पूर्ण रूप से स्वतंत्र अनुभव कर सके।

आज हिन्दुस्तानी संगीत के लिए दो मुख्य स्वरलिपियाँ भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर पद्धतियाँ प्रचलित हैं। इन दोनों स्वरलिपियों के न केवल संकेत विधान भिन्न हैं अपितु इनकी प्रस्तुतीकरण और

अभिन्यास में भी अंतर है। उदाहरणार्थ विष्णु दिगम्बर पद्धति में स्वरों का समय–मान प्रत्येक स्वर के नीचे अंकित किया जाता है। किन्तु भातखण्डे पद्धति में स्वर अर्धवृत में दर्शाये जाते हैं और प्रत्येक स्वर का समय–मान एक मात्रा में दर्शाये हुए स्वरों तथा अवग्रहों के आधार पर निश्चित किया जाता है। परन्तु प्रस्तुत संगीत संहिता एक समान स्वर लिपि है। जिसके अंतर्गत समान नियमों द्वारा हिन्दुस्तानी संगीत के विभिन्न पक्षों का समावेश किया गया है। यदि किसी कारणवश जब कभी एकीकृत नियमों का पालन संभव न हो पाये तो ऐसी दशा में आवश्यकतानुसार वैकल्पिक नियमों का प्रावधान किया गया है। जिनके द्वारा किसी एक लिपि में संगीत को ब्रेल बद्ध किया गया है। किन्तु इस प्रावधान का प्रयोग यदा–कदा अनिवार्य दशा में ही किया जाता है। ब्रेल की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समय–मान यानि कि मात्राओं को समान रीति से इस स्वरलिपि में अपनाया गया है। ब्रेल लिपि में भी चिन्हों को ठीक उसी तरह लिखा जाता है जिस तरह दृष्टिगत पुस्तकों में। अंतर केवल इतना है कि ब्रेल में स्वरों को लिखने का ढंग कुछ अलग है। उदाहरण के लिए मध्य सप्तक के लिए किसी भी चिन्ह की आवश्यकता नहीं होती। मन्द्र अथवा तार सप्तकों के लिए स्वरों से पूर्व चिन्ह लिखे जाते हैं। कण स्वर का चिन्ह स्वर से पूर्व लिखा जाता है। तार अथवा मन्द्र सप्तक में आये कण स्वरों के लिए भी यही नियम प्रयुक्त होते हैं। मींड का चिन्ह उस स्वर के पश्चात् अंकित किया जाता है। जिस स्वर से मींड आरम्भ होती है उस स्वर से पूर्व चिन्ह लगाया जाता है। किन्तु यदि मींड वाले स्वरों के मध्य कोई कण स्वर न हो तो इस दशा में दोनों स्वरों के मध्य च यानि ब्रेल की संख्यानुसार एक चार बिन्दु अंकित किये जाते हैं। एक मात्रा में आये हुए स्वरों के लिए बिन्दु एक का प्रयोग किया जाता है। दो मात्रा, तीन मात्रा अथवा चार मात्रा के लिए अलग से कोई चिन्ह नहीं होते हैं। इन्हें दर्शाने के लिए दृष्टिगत लिपि का अनुसरण किया जाता है और इन्हें अवग्रहों द्वारा अंकित किया जाता है। अवग्रह स्वरों के पश्चात् अंकित किया जाता है। और प्रत्येक स्वरों का समयमान प्रत्येक अवग्रह के समयमान के चिन्ह के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसके अतिरिक्त दो मात्रा, चार मात्रा, छः मात्रा आदि को दर्शाने के लिए प्रत्येक ऐसी संख्या के उपर्युक्त स्वर को उसके ब्रेल समतुल्य निम्न चिन्ह द्वारा अंकित किया जाता है। ऐसी संख्याएँ जैसे पौने मात्रा, सवा मात्रा, डेढ़ मात्रा तथा पौने दो मात्राओं के लिए दृष्टिगत लिपियों का ही अनुसरण किया जाता है।

भातखण्डे प्रणाली में खटके के स्वर गोलाभिवार के मध्य दर्शाये जाते हैं। किन्तु ब्रेल स्वरलिपि में ऐसा नहीं हो सकता। खटके में आये निहित स्वरों को पूर्वरूपेण लिखा जाता है। उनके पूर्व समय–मान का चिन्ह अंकित किया जाता है। जैसे (प) ब्रैकिट की संख्या ब्रेल में दो, तीन, पाँच, छः है। ब्रेल स्वरलिपि में ताली की संख्याओं को अंग्रेजी भाषा की वर्णमाला के छब्बीस अक्षरों द्वारा अंकित किया जाता है। ब्रेल स्वरलिपि में स्वरों के लिए चिन्हों को लिखने का ढंग कुछ इस प्रकार है–

1) शुद्ध स्वरों के लिए कोई चिन्ह नहीं होता।
2) कोमल रे के लिए इंग्लिश का डब्ल्यू या हिन्दी का ठ लिखा जाता है जिसकी संख्या दो, चार, पाँच, छः है।
3) कोमल ग के लिए ज्ञ लिखा जाता है जिसकी संख्या एक, पाँच, छः है।

4) तीव्र मध्यम के लिए हिन्दी का तालव्य श जिसकी ब्रेल में संख्या एक, चार, छः है।

5) कोमल धैवत के लिए इंग्लिश का Z जिसकी संख्या एक, तीन, पाँच, छः है।

6) कोमल नि के लिए हिन्दी के ड का प्रयोग किया जाता है। जिसकी संख्या एक,दो, चार, छः है।

जिस प्रकार स्वरों के चिन्हों को दर्शाने के लिए दृष्टिगत लिपियों का सहारा लिया जाता है ठीक उसी प्रकार ब्रेल स्वरलिपि के माध्यम से स्वरों या स्वरों के चिन्हों को काफी हद तक दर्शाना संभव हो गया है।

वर्तमान समय में ब्रेल की ऐसी बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनमें ब्रेल स्वरलिपि पद्धति का भरपूर प्रयोग किया गया है। या यूँ कह सकते हैं कि ब्रेल की पुस्तकों में शास्त्रीय पक्ष के साथ–साथ क्रियात्मक पक्ष का भी लाभ उठाया जा सकता हैं। ब्रेल पुस्तकों को छापने के लिए ब्रेल प्रैस तो उपलब्ध है ही किन्तु कुछ समय से दृष्टिगत पुस्तकों को एम्बॉजर के द्वारा ब्रेल में परिवर्तित किया जा रहा है। किन्तु इस उपकरण में संगीत की स्वरलिपियों को दर्शाने में कई बाधाएँ सामने आ रही हैं। परन्तु ऐसी आशा की जा रही है कि भविष्य में इस समस्या का भी समाधान सम्भव हो पायेगा।

आजकल लगभग सभी लोग स्मार्ट फोन का प्रयोग करते हैं। सामान्य लोगों की भाँति दृष्टिबाधित वर्ग भी इसका प्रयोग प्रचुर मात्रा में कर रहा है। फर्क बस इतना है कि वे लोग टॉकबैक की सहायता से स्मार्ट फोन का प्रयोग करते हैं और समय की भी यही माँग है क्योंकि स्मार्ट फोन में बहुत सारी ऐसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं जिनका प्रयोग बड़ी ही आसानी से किया जा सकता है। यह सुविधाएँ आई फोन और ऐनड्रॉइड दोनों में है। आई फोन में वॉइस ओवर की सुविधा है और एनड्रॉइड में टॉकबैक की सुविधा उपलब्ध है। भविष्य में एक ऐसे मोबाईल के आविष्कार की संभावना की जा रही है जिसके बटनों पर ब्रेल की संख्याएँ या अक्षर लिखे होंगे। इतना ही नहीं अपितु इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारियों को भी ब्रेल में पढ़कर प्राप्त कर सकते हैं। इस मोबाईल को बी–टच के नाम से जाना जायेगा परन्तु अभी तक यह भारत में नहीं आया है। कहा जाता है कि कोरिया में इसका आविष्कार हो चुका है। इस इलैक्ट्रॉनिक उपकरण के कारण ब्रेल की उपयोगिता को कम नहीं आँका जा सकता। बल्कि इसमें और भी संशोधन करके इसकी आवश्यकताओं को बढ़ाया जा रहा है ताकि दृष्टिबाधित वर्ग अधिक से अधिक लाभान्वित हो सके एवं हर विषय एवं हर संस्कृति की जानकारी प्राप्त कर सकें। इसके लिए बहुत से नये–नये उपकरणों का आविष्कार किया जा रहा है ताकि ब्रेल को भी अन्य इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के समान ऊँचा दर्जा प्राप्त हो। ब्रेललिपि की उपयोगिता इतनी अधिक बढ़े कि इसकी आवश्यकता ही नहीं बल्कि यह लोगों के लिए अनिवार्य ही हो जाये।

संदर्भ

1. hindi.webdunia.com/inspiring-personality/louis-braille-120010300030-1html
2. bharatdiscovery.org/India/ब्रेल लिपि
3. AFB American Foundation for the Blind, afb.org.braille
4. ब्रेल संगीत स्वरलिपि, भाग–I, लेखक– श्री रमेशचन्द्र निझावन, पृ॰ सं. 6